रोल आफ साइंस एण्ड स्प्रीचुअलिटी फार सस्टेनेबल एग्रिकल्चर

ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग एज्युकेशन अण्ड रीसर्च फाउण्डेशन से संलग्न ग्राम विकास प्रभाग और भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा आयोजित रोल आफ साइंस एण्ड स्प्रीचुआलिटी फार सस्टेनेबल एग्रिकल्चर विषय पर संगोष्ठी का प्रारंभ 17 सितम्बर 2011 बी.पी.पाल आडिटोरियम में ब्रह्मकुमारीज़ की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनीजी के अध्यक्षता में हुआ जिसमें ग्राम विकास राज्य मंत्रि श्री प्रदीप कुमार जैन अथिति विशेष के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि आज रासायनिक और कीटनाशक की अधिक मात्रा में उपयोग करने से कृषि उत्पादनों की स्वादिष्टता और पौष्टिकता नष्ट हो रही है और ही खाद्य अन्न और सब्जियाँ मानव स्वास्थ के लिए समस्याएं बन रही है इसके लिए मन को स्वस्थ करने की जरूरत है। जैसा अन्न वैसा मन जैसा पानी वैसी वाणी। दादी हृदयमोहिनीजी ने अपने अध्यक्षीय प्रवचन में कहा कि आज मानव की वृत्ति दूषित होने कारण ही जीवन में अशान्ति है अगर वृत्ति शुद्ध है तो उसका प्रकृति और पेड़ पौधों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। वृत्ति में परमात्मा की अगर याद है तो उसके फल स्वरूप जीवन में सुख और शान्ति मिलती है। खेती में भी मेडिटेशन से अन्न और सब्जियों में अच्छे रिजल्ट मिल सकते है और सतोगुणी वृत्ति से मनुष्य आत्माएं काम क्रोध, लोभ आदि विकारों से मुक्त हो सकते है। इसी आध्यात्मिक शक्ति से भारत स्वर्ग बनेगा। इस रिट्रीट को भ्राता बृजमोहनजी अडिशनल सेक्रेटरी जनरल, भ्राता विनोद कुमार श्रीवास्तव, डायरेक्टर,राज्य कृषि प्रबंध संस्था, लखनऊ, एम दादलानी, उप निर्देशिका, बी के सरला बहन राष्ट्रीय संयोजिका ग्राम विकास प्रभाग तथा डॉ जे पी शर्मा, हेड, डिविजन ओफ एग्रिकल्चर एसोसियेशन, आई.ए.आर.आई., नई दिल्ली ने भी सम्बोधित किया।

इसके अतिरिक्त टेकनिकल सेशन्स भी चले जिसमें पहला सेशन चला साइन्टिफिक बेसिस आफ यौगिक खेती जिसमें राकेश मेहता, स्टेट इलेक्शन कमिशनर भ्राता राकेश मेहता ने कहा कि रासायनिक खादों का नुकसान हमारे सामने प्रत्यक्ष है जैविक खाद और योग से उत्पन्न हुई अन्न और सब्जियों में ताकत ज्यादा रहती है हमें उसकी साइन्टिफिक इफेक्ट को देखना चाहिए। हम क्वांटिटी से ज्यादा क्वालिटी पर ध्यान दे। इसके अतिरिक्त डा.आर के पाठक, पूर्व निदेशक, सी.आई.एस.हेच, लखनऊ, डा.एस.के.द्विवेदी, वि.वेंकटाचलम अडिशनल सेक्रेटरी, भारत सरकार कहा कि वर्तमान समय में फूड सेक्यूरिटी सबसे बड़ी समस्या है, रसायनिक खादों के उपयोग के असंतुलन से भी काफी नुकसान हुआ है। यौगिक

खेती किसानों तक पहुंचाने के लिए साइंटिफिकली यह सिद्ध कर बताना होगा कि कैसे उससे क्वांटिटी अथवा क्वालिटी सुधर सकती है। अतिरिक्त सचीव, मिनिस्ट्री आफ अग्रिकल्चर, डा.ए.आर.शर्मा, प्रोफेसर, एग्रोनोमि, आई.ए.आर.आई ने भी अपना वक्तव्य दिया।

दूसरा सेशन रोल आफ राजयोगा फार अग्रिकल्चर अडवान्समेन्ट विषय पर चला जिसमें भ्राता जे.के.दादू, संयुक्त सचीव, उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार ने कहा कि हवा और पानी का प्रदूषण कृषि में सबसे ज्यादा समस्याएं पैदा करते है। इसलिए हमें प्राचीन वैदिक संस्कृति की ओर वापिस जाना होगा। इनके अतिरिक्त लखनऊ से आये भ्राता सी.पी.श्रीवास्तव, वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बी.के.जागृति, भ्राता सीताराम मीणा, लेबर कमिशनर, यू.पी.सरकार और डॉ. एस.सी.जोशी, पर्यावरण विध, आई.ए.आर.आई ने भी वक्तव्य दिया।

तीसरा टेकनिकल सेशन में एन्शियन्ट मेथड्स आफ कन्जर्वेशन अग्रिकल्चर में भाग लेते हुए डाँ राजेन्द्र चौधरी, निदेशक, संचार मंत्रालय, भारत सरकार ने कहा कि उत्पादन बढ़ाने के लिए रसायनिक खाद का प्रयोग जिस मात्रा में बढ़ाया गया वह सब समस्याओं की जड़ है। यह बातें हमें किसानों तक ले जाने कि आवश्यकता है। अभी समय आ गया है कि तत्वों का ज्यादा दोहन न करे। उस के लिए कन्जर्वेशन अग्रिकल्चर की विधि को अपनाना चाहिए। जी.बि.पन्त यूनिवर्सिटी आफ अग्रिकल्चर अण्ड टेकनोलजी के कुलपति डा.बी.एस.बिश्त ने कहा कि रासायनिक खादों कि अधिक उपयोग जो पंजाब और हरियाणा में हुआ उससे हम सीख लेकर आध्यात्मिक की ओर कदम बढ़ाने पड़ेंगे। आध्यात्म एक ऐसा माध्यम है जिससे हर समस्या का हल है। इसके अतिरिक्त भ्राता राजेश दवे, ए.जी.एम, नाबार्ड, मुम्बई, डॉ.ए.आर शर्मा, प्रोफेसर, अग्रोनमी, आई.ए.आर.आई., डॉ.टी जानकी राम, फलोरीकल्चर, आई.ए.आर.आई तथा वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका बी.के.सुनन्दाने भी अपना वक्तव्य दिया।

18 सितम्बर 2011

सेशन 4 में प्लेनेटरी ईफेक्टस ओन प्लान्टस एण्ड इटस सायन्टीफीक बेजिस में की नोट्स स्पीकर डॉ.रविन्द्र सिंग, आई.ए.आर.आई ने कहा कि हमारे देश में बहुत तेज गति से आबादी बढ़ रही है। जमीन कम हो रही है। संसाधन भी कम हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में पर्यावरण संतुलन ये भी हमारी जिम्मेदारी है। तब आने वाले समय में हमारी आवश्यकतायें पूर्ण करने के लिए प्रबन्ध करना होगा। मिट्टी, बीज आदि को ठीक करना होगा। अर्थ प्लेनेट

औरी मेग्नेट की असर बीज और प्लान्ट की वृद्धि पर होता है। इससे अंकुरण, जड़ और तने में भी वृद्धि होती है और उत्पादन में 18 से 25 प्रतिशत वृद्धि मिलती है। इस सत्र में इसके अतिरिक्त डॉ. एस. के. सींग, लखनऊ, डॉ. सी.बी.सींग, आई.ए.आर.आई., डॉ. एस.पी. राउत, पुणे, डॉ.तारा सत्यवती, आई.ए.आर.आई तथा बी.के. शुक्ला जी ने अपने वक्तव्य दिये।

पांचवा सत्र यौगिक खेती एक्सीपीरीयन्स शेरींग बाय फार्मर्स एण्ड सायन्टीस्ट में भ्राता विनय कुमार श्रीवास्तव ने कहा कि योग भी एक प्रयोग है। एकाग्रता चाहे वैज्ञानिक हो चाहे किसान हो सभी के लिए जरूरी है। एकाग्रता से खेती में भी अच्छे परिणम पा सकते हैं। सुनिता पांण्डे, पंतनगर ने अपने अनुभव सुनाते हुए कहा कि मेडीटेशन से व्यक्ति का ओरा बनता है और उसमें वेल्यु एडीसन होती है। जिससे खेती में भी प्रभाव पड़ सकता है। प्रोफेसर केवलानंद जी, पंतनगर खेती में अपने अनुभव बताते हुए कहा कि सोसायटी ओफ एग्रो फार्मर्स उत्तराखण्ड ने यौगिक खेती के अच्छे परिणाम हांसिल किये है। भ्राता विष्णु भाई, कोल्हापुर ने अपने यौगिक खेती के अनुभव सुनाते हुए कहा कि मैंने गन्ना, टमाटर और गोबी की फसल बीना रासायनिक खाद योग के प्रयोग और जैविक खाद के उपयोग से ली है। जिसमें मुझे उत्पादन में वृद्धि मिली है तथा पाक संरक्षण में भी मदद मिली है। इस सेशन को डॉ. जे.पी.शर्मा, आई.ए.आर.आई तथा अध्यक्ष डॉ.पांडे, पंत नगर ने भी अपना वक्तव्य दिया।

अन्त में दो दिन की इस रीट्रीट के समापन सत्र में डॉ. सुदर्शन गांगुली, आई.ए.आर.आई. ने कहा कि नेगेटिव थोट्स टोक्सिन है, पाजिटीव थोट से ब्रेइन को पोषण मिलता है। मेडीटेशन को खेती में लागू करने से अवश्य लाभ मिलेंगे और कई किसान और वैज्ञानिकों का अनुभव है। बी.के.राजू भाई, मुख्यालय संयोजक ने कहा कि वास्तव में हम एक आत्मा है। यह शरीर तो अपना एक साधन है। भृकुटि में स्थित होकर हम पवित्रता, प्रेम, आनंद, शांति और शक्ति के प्रकंपन हम फैला सकते है। जिससे उर्जा पैदा होती है। इसी उर्जा से मनुष्य आत्मा के जन्म जन्मान्तर के स्वभाव संस्कार परिवर्तन होते हैं। अगर मेडीटेशन से मनुष्य में परीवर्तन आ सकता है तो खेती में हम उसका लाभ नहीं ले सकते हैं? ग्राम विकास प्रभाग के कई राज्यों में किसान भाई-बहनों ने योग के प्रयोगों के माध्यम से अपनी खेती में अच्छे अच्छे परीणाम हांसिल किये हैं। आप सभी को माउण्ट आबू मैं हार्दिक निमंत्रण देता हूँ।